दैनिक जागरण

वाराणसी, बुधवार, 11 जुलाई 2018

हौसले की ढाल से दिव्यांग शहनाज ने संवारी जिंदगी

मुहम्मद इब्राहिम, ज्ञानपुर (भदोही)

नारी सशक्तीकरण

इरादे नेक व हौंसले बुलंद हो तो फिर कोई भी मुसीबत इंसान को डिगा नहीं सकती। न तो मुफलिसी की मार राह की बाधा बनेगी न ही शारीरिक दिव्यांगता व निरक्षरता की बेड़ी। खुद दिव्यांग व दिव्यांग पति के साथ निकाह रचाकर ससुराल पहुंची जनपद के अभोली ब्लाक क्षेत्र के वीरभद्रपट्टी गांव निवासी शहनाज बेगम ने जब बुलंद हौंसले के साथ गृहस्थी को संवारने की जिम्मेदारी अपने कंधों पर ली तो फिर कभी मुड़कर पीछे नहीं देखा। पहले ककहरा सीखा और उनकी लगन व मेहनत ही थी कि मायके मिले सिलाई -कटाई के हुनर को जरिया बनाया तो अपने को इस काबिल बनाया कि आज न सिर्फ अपने घर पर बल्कि एक निजी आइटीआइ विद्यालय की बालिकाओं में भी सिलाई -कटाई के हुनर का रंग भर रही हैं। तीन सौ से अधिक बालिकाओं को सिलाई-कटाई में दक्ष कर चुकी हैं।

सुरियावां नगर के एक सामान्य परिवार में जन्म लेने वाली शहनाज बचपन से ही एक पैर से दिव्यांग थी। इसका खामियाजा उन्हें इस रूप में भुगतना पड़ा कि विद्यालय दूर होने के चलते स्कूल नहीं जा सकीं।

इतना जरूर रहा कि पास स्थित मदरसे में दीनी तालीम (ऊर्दू) का ज्ञान हासिल कर लिया था।

उधर दिव्यांगता के चलते शादी भी हुई तो पति मोहम्मद असलम भी एक हाथ से दिव्यांग थे। यहां तक की वर्ष 2006 में निकाह कबूल कर ससुराल की दहलीज पर कदम रखने से पहले सास-ससुर का साया भी सिर से उठ चुका था। पति के बड़े भाई ने शादी कराई थी। शादी के एक दो वर्ष बाद ही जेठ से जहां गृहस्थी अलग हो गई तो कुछ वर्षों के अंतराल में वह क्रमशः पांच बच्चों (दो पुत्र व तीन पुत्रियों) की मां बन गई। उधर दिव्यांगता के चलते कोई मेहनतकश काम न कर पाने से हाईस्कूल तक की शिक्षा हासिल किए पति किसी तरह ऊर्दू का ट्यूशन कर परिवार का खर्च उठा रहे थे। उस आमदनी से जरूरतें पूरी नहीं हो पा रही थी। परिवार की इस आर्थिक तंगी को दूर करने के लिए शहनाज ने खुद अपने कंधों पर जिम्मेदारी लेते हुए वर्ष 2007 में समूह का गठन कर कुछ पैसा जमा करना शुरू लेकिन यहां निरक्षरता के चलते वह दूसरों पर आश्रित रहती थी। इसी बीच वर्ष 2013 में गांव में अनपढ़ महिलाओं को अक्षर ज्ञान कराने के लिए तारा अक्षर का केंद्र खुला और उसका देख-रेख कर रहे राजेश कुशवाहा ने जब प्रेरित किया तो उन्होंने पढ़ाई शुरू कर दी। साथ ही बचपन में मिले सिलाई -कटाई के हुनर को सहारा बनाते हुए जब रोजगार की दिशा में आगे कदम बढ़ाया तो फिर कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। वह अब तक तीन सौ से अधिक बालिकाओं को सिलाई-कटाई सिखाकर उन्हें इस काबिल बना चुकी हैं कि वह अपने मुसीबत के दिनों में मुफलिसी का शिकार न होने पाए तो उससे होने वाली आय से खुद अपनी गृहस्थी को संवारने में कोई कसर नहीं छोड़ रही हैं। उन्होंने कहा कि लगन के साथ यदि मेहनत की जाय तो कोई भी कार्य मुश्किल नहीं होता। प्रत्येक महिलाओं को चाहिए कि वह आत्मनिर्भर बनकर परिवार का सहयोग करें।